मीरा के पद

1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तर - पहले पद में मीरा कहती है कि प्रकार है, प्रभु आप अपने सभी भक्तों के दुखों को हरते हैं। जैसे द्रोपदी की लाज बचाने के लिए साड़ी का कपड़ा बढ़ाते चले गए। प्रह्लाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप धारण कर लिया और ऐरावत हाथी को बचाने के लिए मगरमच्छ को मार दिया। इसी प्रकार मेरे भी सारे दुखों को हर लो अर्थात सभी दुखों को समाप्त कर दो।

2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण की नौकर बनने की विनती इसलिए करती है क्योंकि वह श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका खोना नहीं चाहती है। वह कहती है कि मैं बगीचा लगाऊँगी ताकि रोज सुबह उठते ही कृष्ण के दर्शन हो सकें।

Q. मीरा ने श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

उ. मीरा श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहती है कि उन्होंने सर पर मोर पंख का मुकुट धारण किया हुआ है। मीरा कहती है कि जब श्री कृष्ण वृंदावन में गाय चराते हुए बाँसुरी बजाते हैं तो सब मोह लेते हैं।

Q. मीरा की भाषा पर प्रकाश डालिए।

मीरा को हिंदी और गुजराती दोनों की कवयित्री माना जाता है। इनकी कुल सात-आठ कृतियाँ ही उपलब्ध हैं। कविता मीरा की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है। इसमें राजस्थानी, ब्रज, गुजराती, पंजाबी और खड़ी बोली का मिश्रण है। पदों का भी भक्तिरस है तथा अनुप्रास, पुनरुक्ति, रूपक आदि अलंकारों का भी

प्रयोग किया गया है।

Q वे श्री कृष्ण को पाने के लिए क्या क्या कार्य करने को तैयार थी है?

उ मीरा श्री कृष्ण को पाने के लिए अनेक कार्य करने के लिए तैयार है - वे कृष्ण की सेविका बन कर रहने को तैयार है, वे उनके विचरण अर्थात घूमने के लिए लिए बाग बगीचे लगाने के लिए तैयार है, ऊँचे महलों में खिड़कियां बनाना चाहती है ताकि श्री कृष्ण के दर्शन कर सके और यहीं तक की आधी रात को जमुना नदी के कि कुसुमी रंग की साड़ी पहन कर दर्शन करने के लिए तैयार है।